आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2491 • उदयपुर, गुरुवार 21 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

निशा को मिला नया सवेरा

बेतिया (बिहार) की रहने वाली निशा कुमारी (15) का बॉया पैर जन्म से ही विकृत अर्थात् छोटा था। पैरों के इस असंतुलन को देख पिता चान्देश्वर शाह व माता चंदादेवी सहित पूरा परिवार चिंतित रहा। किसी ने बताया कि थोड़ी बड़ी होने पर बच्ची का पाँव स्वतः ठीक हो जाएगा, लेकिन ऐसा न होने पर माता–पिता की चिंता और अधिक बढ़ गई। अस्पताल में दिखाने पर ऑपरेशन का काफी खर्च बताया, जो इनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था।

पिता बाजार में सब्जी का विक्रय करते हैं एवं माता खेतीहर मजदूर है। निशा के दो भाई और और दो बहनें हैं। कुल मिलाकर परिवार में सात सदस्य हैं, जिनका पोषण माता–पिता की कमाई से बामुश्किल हो पाता है। कुछ ही समय पूर्व दिल्ली में रहने वाले इनके करीबी रिश्तेदार भूषण शाह ने टीवी पर नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क पोलियो सुधार ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग वितरण के बारे में कार्यक्रम देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तत्काल निशा के पिता को सूचित किया।

बिना समय गंवाए चान्देश्वर और उनके साढू वासुदेव शाह जुलाई के पहले सप्ताह में ही निशा को लेकर उदयपुर संस्थान मुख्यालय पहुँचे, जहाँ डॉक्टरों ने उसकी जाँच कर 'एक्सटेंशन प्रोस्थेटिक' (कृत्रिम अंग) लगाया।

इसके लगने से निशा के दोनों पाँवों में संतुलन है और वह बिना सहारे चल सकती है। निशा के भविष्य के प्रति चिंतित पूरा परिवार अब प्रसन्न है।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पाँव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गाँव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गाँव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पाँव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुँचे। जहाँ उनके दोनों कटे पाँव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं कि अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूँ और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

मालपुरा (टोंक) में दिव्यांग जाँच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 10 अक्टूबर 2021 को नारायण सेवा संस्थान के बारादरी बालाजी पुरानी तहसील मालपुरा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री बारादरी रामचरित मानस मण्डल शिविर में 17 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 16 के लिये कैलिपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती इन्दु जी मित्तल (महिला प्रदेश अध्यक्ष अग्रवाल समाज, चौरासी) अध्यक्ष श्री त्रिलोक जी जैन (अध्यक्ष भाजपा मण्डल मालपुरा), विशिष्ट अतिथि श्रीगुंजन जी मित्तल (ब्लॉक अध्यक्ष महिला अग्रवाल समाज, मालपुरा), श्री विकास जी जैन (समाजसेवी), श्री सुरेन्द्र जी जैन (शाखा संयोजक संस्थान सेवा संस्थान, मालपुरा), कृपा करके पधारे। शिविर में श्री नाथुसिंहजी, श्री प्रकाश मेघवाल, (टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्ढा (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट(सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दीं।

संस्थान द्वारा अहमदाबाद में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान, इसके आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुँचाने का सेवा प्रारंभ की गई थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत हो जारी है।

01 सितम्बर 2021 को एक राशन वितरण शिविर अहमदाबाद (गुजरात) में संपन्न हुआ। इसमें 41 परिवारों को राशन प्रदान किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान श्रीमान शंकर भाई चौधरी, अध्यक्ष श्रीमान किरीट भाई, जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान राघवेन्द्र सिंह जी एवं श्रीमान् मूलचंद जी, श्रीमान नरेश जी, श्री शांतिलाल जी, श्रीमान सिनू भाई, श्रीमान राधेश्याम जी आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्रीमान् मुकेश जी शर्मा, श्री सुरेन्द्र सिंह जी ने व्यवथाएँ देखी। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

संस्थान की आगामी पांच वर्ष : योजना

1,40,400 शल्य चिकित्सा
संस्थान द्वारा किये जाने वाले ऑपरेशन में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य।

1,87,200 सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण
25 प्रतिशत सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण ज्यादा होगा।

46,800 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण
10 प्रतिशत कृत्रिम अंग ज्यादा बनायेंगे।

510 दिव्यांग जोड़ों की बसेगी गृहस्थी
सन 2026 तक 10 सामूहिक विवाह समारोह का होगा आयोजना

250 एनजीओ को लेंगे गोद
प्रतिवर्ष 50 छोटी एनजीओ को देंगे आर्थिक मदद।

एनसीए होगा उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत
सन 2026 में प्रतिवर्ष 1000 निर्धन एवं आदिवासी बच्चे पढ़ेंगे।

22,46,400 रोगियों की निःशुल्क फिजियोथैरेपी चिकित्सा
25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की जायेगी।

निःशुल्क मोबाईल रिपेयरिंग, सिलाई, कम्प्युटर एवं फिजियोथेरेपी केन्द्र का शुभारम्भ
2026 के अंत तक संस्थान 82-82 अतिरिक्त केन्द्रों का संचालन करेगा।

सम्पूर्ण भारत में 62 पी एण्ड ओ वर्कशॉप केन्द्र का शुभारम्भ
2026 के अंत तक 62 केन्द्रों का अतिरिक्त संचालन किया जायेगा।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान में सेवा की एक अनूठी मिसाल

नाम – तैय्यबा नूरी , पिता शमशुद्दीन अजमेरी। बिहार निवासी तैय्यबा नूरी की माँ ने बताया की वो जन्म से ही कमजोर थी और 5 –6 साल की उम्र से उसके पैरो में तकलीफ होने लगी और धीरे धीरे उम्र के बढ़ने के साथ साथ उसका पैर टेढ़ा होना लगा। तैय्यबा जब स्कूल जाती थी तो उसके साथ वाले उसे लंगड़ी–लंगड़ी कह कह कर चिढ़ाते थे, इस वजह से उसका मन पढाई में भी नहीं लग पाता था।

तैय्यबा के माता पिता ने अपनी आर्थिक विपदाओं के होते हुए भी काफी इलाज कराया, पर कोई फायदा नहीं हुआ। जब उन्हें कहीं से नारायण सेवा संस्थान के बारे में पता चला वो बिना समय गवाएँ यहाँ पहुँचे और यहाँ उनका आधुनिक तकनीक से ऑपरेशन किया गया। तैय्यबा का पैर अभी सीधा हो गया है और अब वो बहुत खुश है कि कोई उसे लंगड़ी–लंगड़ी कह कर नहीं चिढ़ाएगा।

जन्म से ही दिव्यांग विनोद चलने लगा

विनोद सराठे (27), पिता : पुरूषोत्तमदास जी,शहर पिपरिया, जिला–हौशंगाबाद (म.प्र.) में 27 वर्षों से लकड़ी के सहारे चलने वाले विनोद का जीवन निराशामय था। इलाज के लिए विनोद को कई बड़े शहरों में दिखाया गया, लेकिन पाँव से दिव्यांग विनोद की हालत दिन–दिन बिगड़ती ही गई।

इसी बीच टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर विनोद के हृदय में आशा की किरण जगी और वह अपनी पत्नी के साथ उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान पहुँचा।

जाँच के बाद विनोद के घुटने का निःशुल्क ऑपरेशन हुआ। 27 वर्षों से लकड़ी के सहारे चलने वाले विनोद की लाठी अब छूट चुकी थी और कैलिपर पहनकर आसानी से चलने लगा है। विनोद इसे अपने जीवन की नई शुरूआत मानता है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये मस्तिष्क का पिछला हिस्सा भी सो गया था। हमने माता को पूरा भोजन नहीं दिया। गर्भ अवस्था में 25 परसेन्ट अधिक देना चाहिए था। फिजूल के एक्सरे नहीं करवाने चाहिए थे। कभी बहुत जरुरी है तो क्या करेंगे? बहुत जरुरी है तो करवाना पड़ेगा।

लेकिन अधिक बिना आवश्यकता के नहीं करवाना चाहिए। सी.टी स्केन अति आवश्यकता के गर्भावस्था में नहीं करवाना चाहिए। कम से कम उससे पूरा भ्रूण का विकास होगा। ये सहस्त्रार चक्र पूरा बनेगा। ये अनाहत चक्र पूरा विकसित हो जायेगा। लाला आज से इसी क्षण से गोरेगाँव मुम्बई आप जा पावें या ना जा पावें, वहाँ के शिविर के दर्शन आप कर पायें या ना कर पावें। वहाँ आर्टिफिशल लिम्ब जो दिये जा रहे, आप देख पावें या ना देख पावें। वहाँ से जो रोगी भेजे जा रहें, उनको मिल पावें या ना मिल पावें, लेकिन जब वो ठीक होते हैं, जब कटा हुआ पैर वाले के पैर लगता है। वो कहता है पापा–पापा मेरे पैर आ गये तो हमारा अनाहत चक्र जाग्रत हो जाता है। सहस्त्रार चक्र जागृत हो जाता है। यही चक्रों की कथा है।

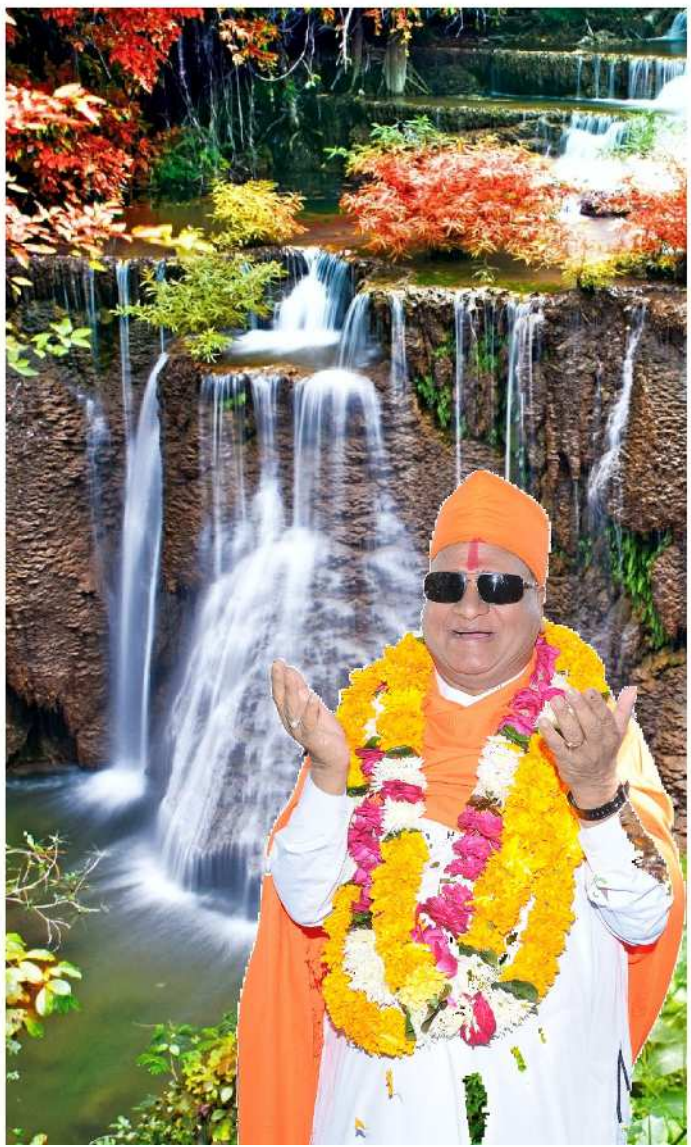

सम्पादकीय

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' का स्मरण आते ही कर्म गति के बारे में ध्यान आता है। कर्म अच्छे हों या बुरे उनका फल तो अवश्य ही मिलता है। कहा जाता है कि कर्मों का संबंध केवल इसी जन्म तक सीमित नहीं है। ऐसा भी सुना है कि 'करम गति टारे नहीं टरे।' तो फिर कर्मों पर हमारा ध्यान इतना क्यों नहीं रहता जितना अपेक्षित है। यह तो तय है कि कारण होने पर ही कार्य होता है पर उस कारण पर हमारा कितना वश है ?

इन सब बातों का एक ही मार्ग है कि हम चाहे सिद्धांत रूप में कर्म के बारे में अधिक ज्ञान अर्जित करें या न करें पर कर्म करने में तो सजगता रखें ही।इस सजगता का परिणाम यह होगा कि हम कर्मबंधन या बुरे कर्म से बचते रहेंगे। इसका सरल सा उपाय यह भी हो सकता है कि हमारे द्वारा कृतकर्मों का समय–समय पर स्वयं ही विश्लेषण करते रहें। हम जो भी कर्म कर रहे हैं, क्या यही कर्म कोई दूसरा करता तो हमें शुभ लगता या अशुभ। यदि हमारी अनुभूति आती है कि अशुभ लगता तो हम इससे तुरंत बचें। शुभ या अशुभ कभी–कभी प्रासंगिक हो सकता है पर ज्यादातर तो सर्वमान्य ही होता है। इसलिये किसी भी कर्म या क्रिया से पूर्व स्वानुभव को संयोजित करना हमारे लिये लाभदायी ही होगा।

कुछ काव्यमय

जो चलता, चलता जाता है।
कहते हैं कि वही एक दिन
अपनी ही मंजिल पाता है।
जिसने हिम्मत नहीं हारी है।
वह सत्वर चलता जायेगा,
होना सफल कहाँ भारी है।
मन में धुन यह बनी रहे।
मुझे सफल होना ही है अब,
संकल्पी मुट्ठी है तनी रहे।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

क्रोध–शत्रु है।

सीता माता मन में कुछ सोच रही है लक्ष्मण जी बोल उठे।

माँ यह कोई बात नहीं,
दोषी मेरे तात् नहीं।
दोष दूर कारक हैं ये,
सब सद्गुण धारक है ये।।

ये तो गुणों का भण्ड़ार, समुद्र हैं, ये विनम्र, विवेकी है, ये सत्य बोलते हैं। ये प्रजा का कष्ट दूर करते हैं। प्रजा को सुखी करते हैं, ये भूखे को भोजन करवाते, ये दिव्यांगों को ठीक करवाते हैं। ये दयावान हैं, ये क्षमावान हैं, ये विद्यावान हैं, ये बुद्धिमान हैं। मेरे बड़े भाईसाहब तो गुणों के सागर है। कोई दोष नहीं हुआ।

किन्तु पिता वचन रखने को,
सबको छोड़ बिलखने को।
कर मंझलि माँ के मन का,
पथ लेते है ये वन का।

चार पंक्तियों में बहुत कुछ कहा। मंझलि माँ कैकेयी ने वरदान माँग लिया, पिताजी अचेत होकर के गिर गये। बार–बार बेसुध हो गये। जो स्मरण सुध होय, जिनके स्मरण से सद्बुद्धि आती है। ऐसे राघवेन्द्र भगवान की कृपा कैकेयी पर नहीं हुई। गणेश भगवान की कृपा मंथरा पर नहीं हुई। गणेश भगवान की कृपा आप पर, हमारे पर बनी रही। कहते है कि रावण को मारना तो सृष्टि अवतार लक्ष्मण जी अपने पैर की छोटी अंगुली से नाश कर सकते थे। ये तो रावणरुपी कुविचार, लोभ, मोह, घमण्ड है।

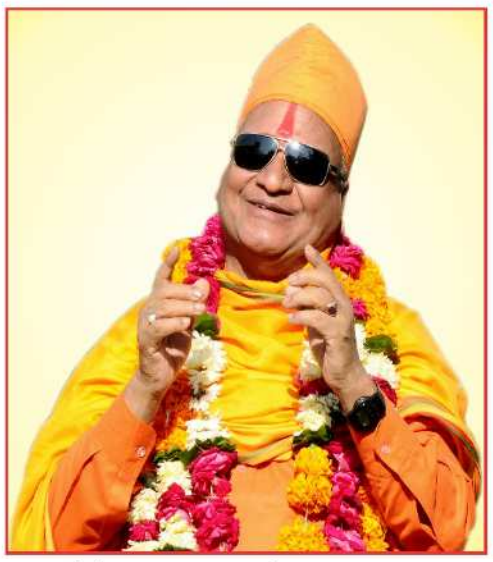

हम चौड़े सड़क सकड़ी, आलूबड़ा अच्छा, मिर्चीबड़ा अच्छा, दही बड़ा अच्छा, लेकिन मेरे को क्या हो गया। घमण्ड किसका आ गया।

मैं नहीं मेरा नहीं
यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है,
वह धन किसी का है दिया।।
अंहकार से दूर रहें .....।।
.....ऐसी क्रांति लानी है।।

गुरुजी– ये क्रांति कथा अनोखी महाराज, कान हमने पैदा नहीं किये। कर भी नहीं सकते। एक नस नहीं बना सकते। कान ही ज्ञानेन्द्री और कान जब अच्छा श्रवण नहीं करते।

जिह हरि कथा सुनहि नहीं काना,
ते श्रवण रन्ध्र अहि भवन समाना।

गोस्वामी जी महाराज ने कहा– जैसे साँप की बाँम्बी है– महाराज! साँप सीधा नहीं जावे, साँप चढ़ जावे। यदि कान का सदुपयोग नहीं करेंगे। एक कान का छेद अपने हृदय में उतरना चाहिए– भाया। बड़ा आदमी है, बड़ा अच्छा गुणी है– भाई! इनको अपनी व्यथा व कथा भी सुनायेंगे। ये बाहर आउट नहीं करेगे, ये निन्दा नहीं करेंगे, ये समाज में व्यथा नहीं फैलाऐंगे तो कानों को ऐसा रखना चाहिए। सीधा हृदय में उतरे। किसके कान में उतरते है निन्दा इधर सुना , इधर बोला भड़का दिया।

रोहित जी– गुरुदेव प्रश्न एक बहन का है, जो ध्यान तो करती है, मगर ये शिकायत करती है, उन्हें अचानक से गुस्सा बहुत आ जाता है? जब गुस्सा आता है, तो उसके बाद में केवल पछतावा होता है, दुःख होता है, कि कड़वे शब्द क्यों बोल गई?

गुरुदेव– रोहित जी– बहन ने ठीक लिखा, गुस्से का अन्त पछतावे से ही होता है। लेकिन गुस्सा, क्रोधित बड़ा शत्रु है। क्रोध आता है, तो बुद्धि अच्छे व बुरे का भेद नहीं करती है। ये कैसे बदलता है? हमारे शरीर के अंगों में आँखे लाल हो गई। नाक में पानी आने लग गया, होंठ फड़कने लग गये। पाँव काँपने लग गये।

हाथ की अंगुलियाँ धूजने लग गई, क्योंकि हमारे शरीर में प्रत्येक क्षण में जो 20 लाख परमाणु पैदा होते हैं वो परमाणु फिर जलन के हो जाते हैं, क्रोध के परमाणु हो जाते है।

ईर्ष्या जाग्रत हो जाती है, विकारों की हो जाती है, हमारी व्याकुलता बढ़ा देते है। इसलिए क्रोध को तो छोड़ ही देना चाहिए।

–कैलाश 'मानव'

देने का आनंद

प्रसन्नता तो चंदन है,
दूसरे के माथे पर लागाइए
आपकी अंगुलियाँ
अपने आप महक उठेंगी।

एक बार एक शिक्षक, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे हैं, जो सम्भवतः पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे, जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, "गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाएँ, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।" शिक्षक गम्भीरता से बोला, "किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक करना ठीक नहीं है, क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है?"

शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छिप गए। मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया। उसके जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अंदर कुछ सिक्के थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट–पलट कर देखने लगा। फिर उसने इधर–उधर देखा। दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब मे डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव–विभोर हो गया। उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहा, "हे भगवान! समय पर प्राप्त इस सहायता

के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।"

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आँखें भर आईं। शिक्षक ने शिष्य से कहा, "क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली?"

शिष्य बोला, "आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ, जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनन्ददायी है। देने का आनन्द असीम है, देना देवत्व है।"

यदि आप पैंसिल बनकर
किसी का सुख नहीं लिख सकते,
तो कोशिश करो कि रबड़
बनकर,
दूसरों का दुःख मिटा दो।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित झीनी झीनी रोशनी से)

रूपये जमा कराने कैलाश यू.आई.टी. गया तो वापस उसी अधिकारी से सामना हुआ। कैलाश ने उन्हें धन्यवाद दिया तो वे खिसियाते हुए बोले– मेरा तो कोई योगदान नहीं रहा, मुझे आप धन्यवाद क्यूं दे रहे हैं। कैलाश ने तब हँसते हुए कहा–कोई बात नहीं, अगर आप ऐसा सोचते हैं तो अब योगदान कर दीजिये, अभी तो बहुत काम शेष है। अधिकारी कैलाश की उसके प्रति निष्पाप भावना से प्रसन्न हो गया। इसके बाद से जमीन का कब्जा दिलाने तक उसने पूरा सहयोग किया। जमीन हिरणमगरी सेक्टर 4 में मिल गई जो 7350 वर्गफीट थी।

इधर पिताजी का इलाज चल ही रहा था। 3 माह बाद बड़े भाई राधेश्याम उन्हें अपने साथ कोटा लेकर चले गये। 1986 का उत्तरार्द्ध चल रहा था। कैलाश उनसे मिलने निरन्तर कोटा जाता रहता था। एक बार पिताजी, माताजी से बोले – देख सोहनी, शरीर की मुझे चिन्ता नहीं है, दुःख सिर्फ इस बात है कि अगर यह शरीर गंगा किनारे छूटता तो ज्यादा संतोष रहता। माताजी भले ही मामूली गृहिणी रही हो, मगर वे किसी विदुषी से कम नहीं थी, बोली – अजी ! आप तो आत्मा में निवास करने वाले हो, शरीर कहाँ छूटता है इसकी चिन्ता क्यूं करते हो? पत्नी की बात सुन कर पिताजी, माँ के कायल हो गये और बोले –वाह! वाह! क्या बात कही है, तेने मेरी आखिरी चिन्ता से भी मुक्ति दिला दी।

उसी रात वे कैलाश को बोले – बेटा, आज रात मेरे पास ही सोना। कैलाश को आशंका हो गई कि पिताजी को शायद अपने महा प्रयाण का आभास होने लगा है। उस रात वह उनके पास ही सोया। रात भर पिताजी ने शांति से नींद ली। अगले दिन सुबह 10 बजे से लगभग उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि उनका खीर खाने का मन हो रहा है। तुरन्त खीर बनाई गई और उन्हें खिलाई। थोड़ी सी खीर खाकर ही उन्होंने तृप्ति व्यक्त कर दी। अब वे बोले–जो कुछ मैं कहूँ, ध्यान से सुनना और वैसा ही करना। सभी एकाग्रचित्त हो उनकी बात सुनने को आतुर हो उठे। उन्होंने कहा–एक तो मेरी बोली बन्द हो जाये तो मेरे कान के पास आकर कीर्तन करते रहना, दूसरा मेरे शरीर को रखना मत, तुरन्त संस्कार कर देना। उनका यह कहना था कि सब रोने लगे। कैलाश ने सबको धैर्य रखने का कहा।

अंश - 140

नीम की पत्तियों से उपचार

पेट में कीड़े होने पर नीम की नई और ताजा पत्तियों का उपयोग करना चाहिए।

नीम का पेड़ अनेक रोगों में फायदेमंद माना गया है। रोजाना नीम की चार–पाँच कोमल पत्तियाँ चबाकर खाने से खून साफ होता है और कई बीमारियों से बचाव होता है।

1. चेचक का इंफेक्शन होने पर नीम के पत्तों को पानी में उबालकर नहाने से लाभ होता है।
2. फोड़े–फुंसियों पर भी नीम के पत्तों का लेप लगाने से फायदा होता है।
3. नीम के पत्तों को पीसकर इसकी गोली सुबह–शाम शहद के साथ लेने से खून साफ होता।
4. डायबिटीज के रोगी को नीम के पत्तों का रस पीने से लाभ होता है।
5. पेट में कीड़े होने पर नीम की नई व ताजा पत्तियों के रस में शहद मिलाकर चाटें।
6. दमे के मरीज को नीम के तेल की 20–25 बूंदे पान में डालकर खाने से राहत मिलती है।
7. नीम की सूखी पत्तियों का धुआँ करने से घर में मौजूद बैक्टरिया नष्ट होते हैं।
8. शरीर पर होने वाली खुजली, खाज और सोरायसिस में राहत के लिए नीम के पतों को उबालकर उससे नहाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

जो वनवासियों को बीड़ी के बंडल फैंकते हुए देख। जिन वनवासियों को सौगन्ध लेते हुए देखा, शराब नहीं पीऊंगा। जिन वनवासियों का बच्चें को, बड़े–बड़े बाल पहले कभी कटिंग नहीं की, आपने कटिंग की। उनको मंजन कराया। मैंने देख, प्रशान्त भैया किसी बच्चे के दाँतों पे अंगुली लगाकर मंजन करा रहा था। कल्पना कपड़े पहना रही थी। गिरधरी जी कुमावत साहब, विश्व की सबसे छोटी उम्र की जादूगरनी। विदेशों में भी बहुत पुरस्कार प्राप्त किया है– आँचल कुमावत। उसके पिताजी, आँचल कुमावत की माताजी श्रीमती आदरणीय ताराजी। इन्जीनियर दोनों, गिरधरी जी और दोनों, समर्पित हो गये। जीवन दे दिया महाराज। पी.जी.जैन साहब बोले –बाबूजी, जिस सपने को में बार– बार देख करता था ऐसी संस्था, जो सम्प्रदाय से रहित हो। वहाँ हिन्दू भी थे, मुस्लिम भी थे। वहाँ हर जाति के लोग थे। सिक्ख भी थे, ईसाई भी थे। कोई जाती का भेदभव नहीं। देअर इज ऑनली वन गॉड। ईश्वर केवल एक है वह सर्वव्यापक है। अलग– अलग ईश्वर कैसे हो सकते हैं? हिन्दुओं का ईश्वर, मुसलमान नहीं मानते। अल्लाह को हिन्दू नहीं मानते, ईसामसीह को फारसी मानते। ईश्वर केवल एक है। कभी श्रीराम के रूप में, कभी शिव के रूप में, कभी श्रीमहावीर स्वामी के रूप में, कभी गौतमबुद्ध के रूप में, कभी ईसामसीह के रूप में। बोले– बाबूजी, आज मैंने देख गरीब–अमीर का कोई भेद नहीं। गणेशजी डागलिया अणुव्रत के एक स्तम्भ। तेरापंथ जैन परिषद् के अध्यक्ष वर्षों तक, स्तम्भ। चाँदी के होलसेल व्यापारी, उनको मैंने छोटे–छोटे बच्चों को गोद में लिये हुए देख। गरीब–अमीर का भेद मिट गया महाराज। अब यही इन्सानियत है। कभी धनवान है कितना,कभी इन्सान निर्धन है। कभी सुख है, कभी दुःख है, उइसी का नाम जीवन है।

जो मुश्किल में ना घबराये,
उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम जो आये
उसे इन्सान कहते हैं।
सेवा ईश्वरीय उपहार– 266 (कैलाश 'मानव')

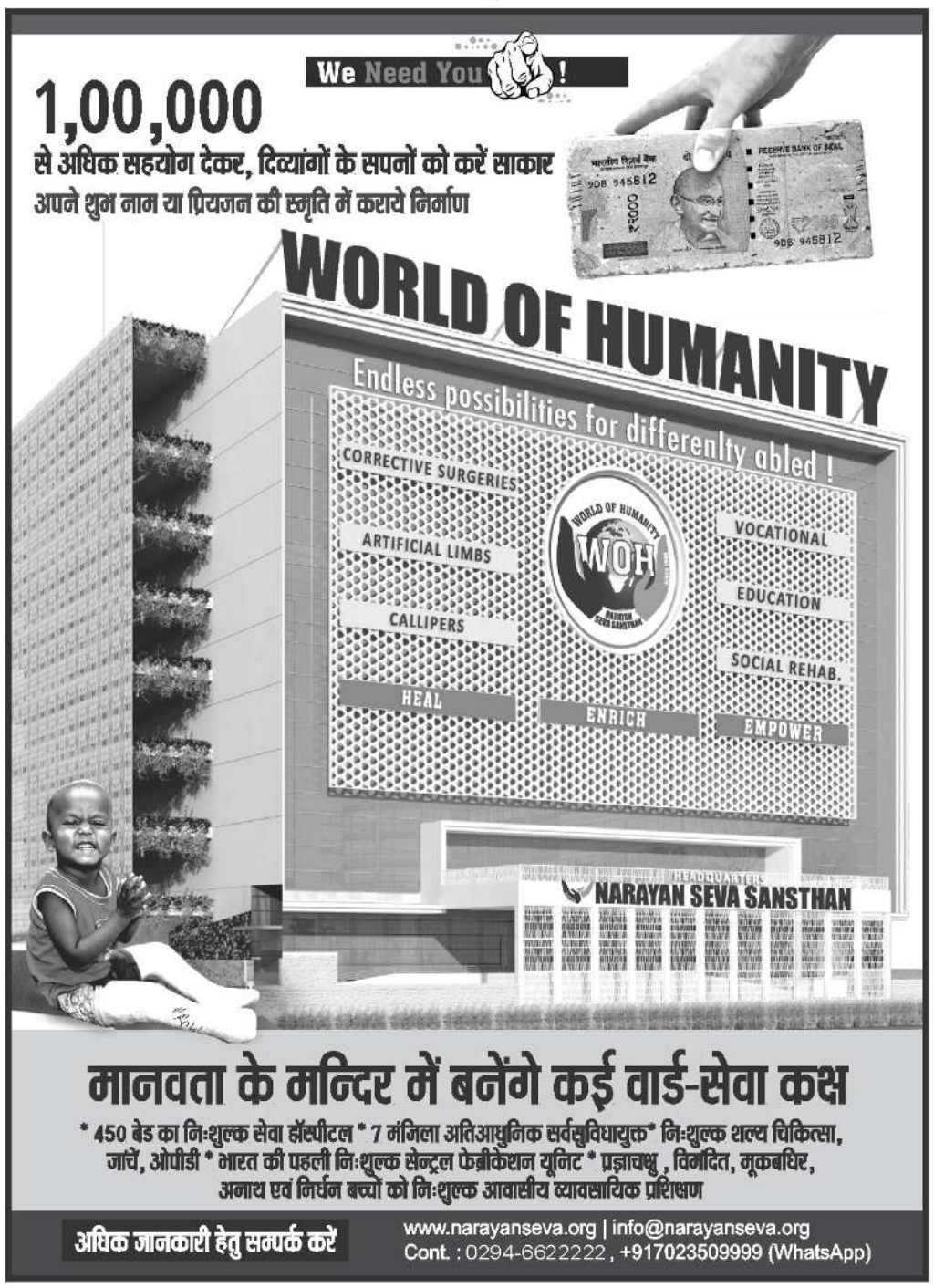

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर **PAY IN SLIP** भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर **AAATN4183F**, टेन नम्बर **JDHN01027F**

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023